पाठ - 3

तौहीदे अस्मा व सिफ़ात (1)

الدرس الثالث - هندي

توحيد الأسماء والصفات

अल्लाह ने जिन नामों और विशेषताओं को अपने लिए ख़ास कर रखा है या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें जिन नामों से पुकारा है उस पर ईमान लाना और बिना किसी हिचकिचाहट और किसी कमी बेशी के उसे इस तरह मानना जो अल्लाह के शायाने शान और उपयुक्त है और उन चीज़ों को नकारना जिन चीज़ों को अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात से जोड़ने से मना किया है और जिन चीज़ों से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना किया है। और जिन चीज़ों के बारे में कोई आदेश नहीं है उनके सिलसिले में भी ख़ामोशी ज़रूरी है। न उसे साबित किया जाए और न उसे नकारा जाए।

अस्माए हुस्ना यानी अच्छे नामों की मिसालों में से एक मिसाल यह है कि : अल्लाह तआला ने अपनी ज़ात को **हैय्य़' और क़य्यूम'** कहा है तो हमारे लिए यह अनिवार्य है कि हम उस पर ईमान लाएं कि **हय्य़'** अल्लाह का एक नाम है। और इस नाम में जो विशेषताएं और गुण शामिल हैं उनपर भी ईमान लाना ज़रूरी है। इससे अभिप्रेत मुकम्मल ज़िंदगी है जिससे पहले न तो कुछ था और न बाद में उसे समाप्त हो जाना है वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

इसी तरह अल्लाह ने अपनी ज़ात को **समीअ'** यानी सुनने वाला कहा है तो हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम इस बातपर ईमान रखें कि **समीअ** अल्लाह के नामों में से एक नाम है और सुनना उसकी विशेषता है।